अध्याय-द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना–

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अन्तर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य–पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इसके अभाव में अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधानकर्त्ता को ज्ञान न हो जाये कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही दिशा में सफल हो सकता है।

गुडबार तथा स्केट्स(1959) कहते हैं–

एक कुशल "चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्त्ता के लिये भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक है।"

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व–

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व निम्न बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट है :–

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां जाता है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अनुसंधानकर्त्ता के पूर्व में वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चुका हो तो हमारा प्रयास निर्रथक साबित होगा अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधानकर्त्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता है।
6. इससे अनुसंधानकर्त्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.3 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन–

शोध विषय के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा इस समस्या पर किए गए शोधों का अध्ययन कर निम्न जानकारी प्राप्त की गई है।

1. **गुप्ता** (1997) ने "अध्यापकों के लिये समावेशी शिक्षा दर्शिका विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल शिक्षण सामग्री मार्गदर्शिका" का विकास किया।
2. **चौपड़ा** (2003) के द्वारा "समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक" विषय पर अध्ययन किया गया। उनके निष्कर्ष के अनुसार समावेशी और बहिष्कार (exclusion) के बीच की खाई को दूर करने के लिये शिक्षक, अभिभावकों, समाज, प्रशासकों और सरकार सामूहिक रूप से समावेशी शिक्षा की नीतियों को लागू करने के लिये काम करना चाहिए।
3. **संधी एस.पी.** (2005) के द्वारा "स्कूलों में श्रवण बधित बच्चों का समावेश– शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक सर्वेक्षण" किया गया उनके निष्कर्ष के अनुसार–
   (1) विकलांग छात्रों के लाभ के लिये रणनीतियों को स्कूल में लागू किया जाना चाहिये।
   (2) अधिकांश शिक्षक विकलांग छात्रों को शामिल करने के लिये सहमत है।

(3) शिक्षकों की योग्यता, शिक्षण अनुभव, लिंग, शिक्षा और प्रबंधन के स्तर के आधार पर व्यवहार में अंतर है।

4. **कथिरिया (2007)** ने "समावेशी शिक्षा के संदर्भ में जूनागढ़ जिले के विद्यालयों का अध्ययन" किया। उनके निष्कर्ष अनुसार–

(1) विशेष विद्यालयों में व्यवसायिक प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था है।

(2) विशेष विद्यालयों में चल रही गतिविधियों पर सामान्य रूप से ध्यान दिया जा रहा है।

(3) शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

5. **रैफरटी एवं ग्रिफिन (2010)** ने "शिक्षक की अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि पर साहित्य की समीक्षा" पर अध्ययन किया उनके निष्कर्ष अनुसार–

(1) समावेशी शिक्षा के लाभ और कमियों के बारे में राय और अनुसंधान बदलती है।

(2) शिक्षक एक समावेशी वातावरण में शिक्षा में सुधार के लिये शिक्षण विधियों की एक किस्म का उपयोग कर रहे है।

(3) प्रोफेशनल विकास समय और सहयोग के लिये आवश्यक है परन्तु योजना भी पर्याप्त नहीं है।

6. **खान (2011)** ने "माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों में अभिवृत्ति और ज्ञान के प्रति बंग्लादेश में समावेशी शिक्षा का अध्ययन किया और पाया कि–

1. माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों का शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को छोड़कर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये समावेशी शिक्षा की दिशा में मुख्य रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति थी।
2. समावेशी शिक्षा की सफलता के लिये अपर्याप्त ज्ञान, प्रशिक्षण की कमी है।
3. शिक्षण सामग्री की कमी शामिल है।

शोध से संबंधित अन्य शोध कार्य :–

1. **टॉविन (1971)** ने प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको का दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति अभिवृत्ति की समस्या का अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि –

   प्रशिक्षित शिक्षक सामान्य कक्षा में दृष्टिहीन विद्यार्थी को कक्षा में स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

2. **सिंह (1987)** के द्वारा बिहार के विद्यालयों में अध्ययनरत शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के लिये प्रदान समावेशित शिक्षा सुविधाओं का मूल्यांकनात्मक अध्ययन किया गया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि

   (1) शासन द्वारा अनुदानित सुविधाएं विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराई गई।

   (2) विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं के प्रति विद्यार्थी उत्साहित नहीं पाये गये एवं उद्देश्य प्राप्ति हेतु प्रदान स्त्रोतों की केवल 33 प्रतिशत उपयोगिता ही प्राप्त हुई।

   (3) शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों का अपने परिवारो से उत्तम सामंजस्य प्राप्त हुआ किन्तु शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों में संचार की कमी पाई गयी। साथ ही शिक्षक के द्वारा इस अन्तराल को कम करने हेतु किये गये प्रयास में भी कमी प्राप्त हुई।

3. **देशमुख (1994)** ने समेकित शिक्षा प्रयोजना के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विकलांग एवं सामान्य छात्र–छात्राओं की नवीनता का तुलनात्मक अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि –

   विकलांग छात्राओं में प्रवाहशीलता, विकलांग छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया। लिंग तथा विकलांगता के मध्य सम्मिलित रूप से अंतः क्रियाओं के प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

4.**तिवारी (1997–98)** ने भारत के मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल शहर से सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि –

दृष्टिहीन व सामान्य विद्यार्थी की सकारात्मक अभिवृत्ति है, क्योकि विद्यार्थी की विकलांगता जन्मजात एवं दुर्घटनावश हो सकती है, और विकलांग भी अध्ययन करना चाहते है जिसमे विकलांगता बाधक नहीं है।